Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.06.02.02
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

प्रेमचंद एवं उनकी औपन्यासिक रचना दृष्टि

अनुपम

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

सच्चाई को साहित्य के धरातल पर उतरने वाले शख्सियत प्रेमचंद हैं। प्रेमचंद की रचना दृष्टि विभिन्न साहित्य रूपों में अभिव्यक्त हुई है। वह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास का परोक्ष एवं प्रत्यक्ष दर्शन होता है। गरीबों एवं पीड़ितों के लिए उनके हृदय में सहानुभूति का अपरिमित सागर था। उन्होंने अपनी रचनाओं में जनसाधारण की भावनाओं परिस्थितियों एवं उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया है। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल एवं विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। आधुनिक हिंदी कहानी के पितामह और उपन्यास सम्राट प्रेमचंद सीधे और सरल जीवन के मालिक थे, एक पूरी पीढ़ी को गहराई तक प्रभावित करके प्रेमचंद ने साहित्य की यथार्थवादी परंपरा की नींव रखी, उनका लेखन हिंदी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिंदी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। बीसवीं सदी के पूर्वार्ध्द में जब हिंदी में तकनीकी सुविधाओं का अभाव था उनका योगदान अतुलनीय है। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी और उपन्यास के विकास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया है। ''वर्तमान सामाजिक जीवन के विविध पक्षों और अंतर्वृत्तियों की बड़ी परख प्रेमचंद जी को मिली है। उन्होंने हिंदी के उपन्यास क्षेत्र को जगमगा दिया। वे हमारे गर्व और गौरव के कारण हैं।''[1]

प्रेमचंद आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में हिंदी उर्दू के विश्वविख्यात और कालजयी कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लेने के कारण उन्होंने अभाव और सुविधाओं के बीच जनजीवन को बहुत गहराई से देखा और अपना जीवन साहित्य के प्रति समर्पित कर दिया। 31 जुलाई सन् 1880 को वाराणसी के करीब लमही गांव में जन्म हुआ पिता मुंशी अजायब लाल श्रीवास्तव और माता का नाम आनंदी था। पिता

Received: 11.08.2023 **Accepted:** 14.09.2023 **Published**: 15.09.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.02
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

ने उनका नाम धनपत राय रखा और ताऊ नवाब राय कहकर बुलाते थे। 8 वर्ष की अल्पायु में ही उनकी माता का निधन हो गया। ''नवाब के आठवें साल में वह चल बसी और उसी दिन वह नवाब जिसे माँ पान के पत्ते की तरह फेरती थी डिठौना लगाकर घर से निकलने देती थी, और आँचल में छिपाए फिरती थी, कभी सर्दी से, कभी गर्मी से, कभी सिंहानेवालों की डीठ से, देखते–देखते सयाना हो गया। तब उसके सर पर तपता हुआ नीला आकाश था, नीचे जलती हुई भूरी धरती थी, पैरों में जूते न थे, बदन पर साबित कपड़े न थे, इसलिए नहीं कि, एकबयक पैसे का टोटा पड़ गया बल्कि इसलिए कि इन सब बातों की फिक्र रखने वाली माँ की आँखें मुँद गई थी।[2]''

सन् 1899 में एंट्रेंस परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की सन् 1900 में 20रू मासिक पर सरकारी स्कूल में अध्यापक की नौकरी शुरू की, जो फरवरी सन् 1921 तक चलती रही असहयोग आंदोलन के दौरान गांधीजी के आह्वान पर फरवरी सन् 1921 में उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। " गाँधी के विचार– दर्शन और व्यावहारिक जीवन–और हमारे समकालीनों में शायद वे अकेले ऐसे थे जिनके यहाँ दोनों एक हो गये–की सबसे बड़ी विशेषता उनकी, किफायतसारी है, जो उनकी तितिक्षा और कड़ाई के आदर्शो से जुड़ी रही है।[3]" सन् 1915 में इंटरमीडिएट और सन् 1919 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. करना चाहते थे, लेकिन बीमारी और जीवन के उठापटक के कारण असमर्थ रहे। जीवन में कई बार कठिनाइयाँ आयीं, कई बार नौकरी बदली आर्थिक बदहाली को दूर करने हेतु मुंबई की फिल्मी दुनिया में भी नौकरी की, सरस्वती प्रेस और प्रकाशन के व्यापार में वे घाटे में रहे और बीमारी ने उन्हें काल के ग्रास में डाल दिया।

प्रेमचंद भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं। बंगाल के विख्यात उपन्यासकार 'शरदचंद्र चट्टोपाध्याय' ने उन्हें उपन्यास सम्राट कहकर संबोधित किया था। प्रेमचंद के उपन्यास में पाठक एक तरफ जहां धारा प्रवाह सहजता पता है वही उसे एक नैतिक संदेश भी मिलता है। कल्पना लोक से अलग उनके उपन्यास में यथार्थ का ऐसा चित्रण मिलता है, जिसे पढ़ने वाले आज भी उसे अपने आस–पास महसूस करते हैं। मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास

Received: 11.08.2023 **Accepted:** 14.09.2023 **Published**: 15.09.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.02
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

की विधा को एक नया आयाम दिया। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने साहित्य में यथार्थवाद की परंपरा शुरू की। उनके उपन्यासों में सेवासदन, गोदान, गबन, निर्मला, कर्मभूमि, प्रेमाश्रम, प्रतिज्ञा, रंगभूमि, वरदान, कायाकल्प आदि शामिल है। "हिंदी उपन्यास को प्रेमचंद की देन अनेकमुखी है। प्रथमतः उन्होंने हिंदी कथासाहित्य को 'मनोरंजन' के स्तर से उठा कर जीवन के साथ सार्थक रूप में जोड़ने का काम किया। चारों ओर फैले हुए जीवन और अनेक सामयिक समस्याओं,पराधीनता, जमींदारों, पूंजीपतियों और सरकारी कर्मचारियों द्वारा किसानों का शोषण, निर्धनता, अशिक्षा, अंधविश्वास, दहेज की कुप्रथा, घर और समाज में नारी की स्थिति, वेश्याओं की जिंदगी, वृद्ध–विवाह, विधवा समस्या सांप्रदायिक वैमनस्य, अस्पृश्यता, मध्यमवर्ग की कुंठाएं आदि ने उन्हें उपन्यास–लेखन के लिए प्रेरित किया था।"[4]

मुंशी प्रेमचंद का 'गोदान' उपन्यास पहली बार सन् 1936 में प्रकाशित किया गया। यह प्रेमचंद का सबसे लोकप्रिय और कालजयी उपन्यास है, जिसकी प्रासंगिकता शायद ही कभी खत्म हो। गोदान ग्रामीण जीवन और कृषक स्मृति का महाकाव्य कहा जा सकता है। यह उपन्यास भारतीय किसान दंपत्ति 'होरी' और 'धनिया' की करुण कथा है। गोदान सिर्फ ग्रामीण परिवेश ही नहीं अपितु शहरी परिवेश को भी विस्तृत रूप से समेटे हुए है। एक तरफ किसानों का शोषण करने वाला जमींदार, महाजन और पटवारियों का चक्रव्यूह है, तो दूसरी ओर मिल मालिक, दलाल और कारोबारियों के रूप में पूँजीपतियों का गठबंधन, जो मजदूरों का शोषण करता है। जहां एक तरफ होरी गुलामी में फंसे भारतीयों का प्रतीक है वहीं दूसरी तरफ परिवर्तन के लिए जमीदारों और साहूकारों के विरुद्ध खड़ा होने वाला गोबर क्रांतिकारियों का प्रतीक है। होरी की स्त्री धनिया एक निडर और स्वाभिमानी स्त्री का प्रतीक है, जिसको प्रेमचंद ने सबला नारी का प्रतीक बनाया है। जिसके अंदर उत्साह है, लगन है, और सत्य का साथ देने का साहस है। इसी प्रकार मिल मालिकों और मजदूर के बीच संघर्ष एवं मजदूरों का हड़ताल पर जाना एवं आंदोलन करना मार्क्सवादी विचारधारा का भी दर्शन कराता है। वहीं मालती और मेहता के माध्यम से प्रेमचंद जी ने अपने गांधीवादी दर्शन और अध्यात्म को भी स्थापित करने का प्रयास किया है। तात्कालिक परिवेश की सभी राजनीतिक विचारधारा का समन्वय करते हुए आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को त्रासद रूप दिया गया है। "'गोदान' का

Received: 11.08.2023 **Accepted:** 14.09.2023 **Published**: 15.09.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.02
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

रचना संतुलन ऐसा बेजोड़ है कि उसमें अनवरत संघर्ष, करुणा, सहानुभूति और ट्रैजिक अंत के बावजूद कहीं किसी एक के प्रति कड़वाहट नहीं आती, गहरा असंतोष उमड़ता–घुमड़ता है तंत्र के प्रति। गाँधी और मार्क्स को जैसे प्रेमचंद ने फेटकर मिलाया हो। ऐसा विधान लेखक के गहरे रचनात्मक आत्मविश्वास का प्रबल साक्ष्य है।"[5]

सेवासदन एक ऐसा उपन्यास है जिसने प्रेमचंद को हिंदी उपन्यासकार के तौर पर प्रतिस्थापित किया और समूचे उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा दी। सन् 1918 में प्रकाशित इस उपन्यास में प्रेमचंद ने नारी पराधीनता, वेश्या जीवन, दहेज प्रथा और मध्यवर्गीय आर्थिक सामाजिक समस्याओं को प्रमुखता के साथ चित्रित करके उसका समाधान भी पेश किया है। उपन्यास की कथा भूमि इस तरह पिरोई हुई है कि पाठक के सामने तत्कालीन समाज की सभी अच्छाइयों और बुराइयों का जीवंत चित्र सामने आ जाता है। ''उपन्यास के रूप में प्रेमचंद की बड़ी सफलता इस बात में भी है कि उन्होंने अच्छी किस्सागोई को व्यापक रचना–दृष्टि के साथ जोड़ा है। उनके पहले ये दोनों तत्व अधिकतर अलग–अलग थे। स्वयं प्रेमचंद इस जोड़ को लंबे प्रयत्न के बाद ढाल सके।''[6]

सन् 1931 में प्रकाशित गबन एक विशेष चिंताकुल विषय से संबंधित उपन्यास है गबन का मूल विषय है महिलाओं का पति के जीवन पर प्रभाव। गबन में टूटते मूल्यों के अंधेरे में भटकते मध्यवर्ग की वास्तविकता का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने पहली बार नारी समस्या को व्यापक आयाम में रखते हुए तत्कालीन भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से जोड़कर देखा है। आभूषणों के प्रति पत्नी के लगाव के जरिये जीवन की असलियत की छानबीन को अधिक गहराई से किया गया है।

सन् 1933 में प्रकाशित 'कर्मभूमि' उपन्यास में प्रेमचंद ने तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। उसमें 1930 के नमक सत्याग्रह, किसान आंदोलन एवं छुआछूत जैसी कुरीतियों, मंदिरों में हरिजनों के प्रवेश जैसे संवेदनशील विषयों का चित्रण बड़े ही मार्मिक तरीके से किया गया है। कर्मभूमि वर्ग संघर्ष पर आधारित एक सामाजिक उपन्यास है। 'प्रतिज्ञा' उपन्यास जो पहली बार सन् 1929 में प्रकाशित हुआ, विधवा समस्या

Received: 11.08.2023 **Accepted:** 14.09.2023 **Published**: 15.09.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.02
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

के समाधान के रूप में लिखित सामाजिक उपन्यास है। इसमें विधवा समस्या को रूढ़िगत और आध्यात्मिक नजरिए से न देखकर जीवन और रोटी दाल की समस्या को हल करने के रूप में चित्रित किया गया है। सन् 1927 में प्रकाशित 'निर्मला' उपन्यास बेमेल विवाह और दहेज समस्या पर आधारित है इस छोटे से उपन्यास में भारतीय नारी की वेदना को सहज रूप से पेश किया गया है बहुसंख्यक मध्यवर्गीय हिंदू समाज के यथार्थवादी जीवन का मार्मिक चित्रण किया गया है।

वहीं 'रंगभूमि' उपन्यास में पूँजीवाद के साथ जन संघर्ष और बदलाव की महान गाथा है। तथा उपन्यास का नायक 'सूरदास' एक ऐसी जाति से है, जिसे समाज में बेहद घृड़ित नजरिए से देखा जाता है। उसके बावजूद उसमें वो तमाम खूबियाँ हैं जिससे उसका पूरा जीवन क्रम राष्ट्र नायक की छवि लगता है। पूरी कथा गांधी दर्शन निष्काम कर्म और सत्य के आग्रह पर टिकी है। सन् 1922 में प्रेमाश्रम उपन्यास पहली बार प्रकाशित हुआ इसकी कथावस्तु भी किसानों की समस्या पर आधारित है। प्रेमाश्रम भारत के तेज और गहरे होते हुए स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखा गया। उपन्यास में व्यापक तौर से किसानों के उत्पीड़न का चित्र अंकित किया गया है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में किसानों की दुर्बलताओं के मूल कारण को भी सामने रखा है। साथ ही समाधान को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। ''महात्मा गाँधी की कार्य–प्रणाली, जीवन–दर्शन और व्यक्तित्व के प्रति प्रेमचन्द की अगाध श्रद्धा थी। 'प्रेमाश्रम' गाँधीवाद के प्रभाव में ही लिखा गया था। प्रेम के माध्यम से हृदय परिवर्तन द्वारा रामराज्य की स्थापना करना इसका ध्येय है आंशिक रूप से यह बोलशेविक क्रांति से भी प्रभावित है।''[7]

प्रेमचंद का एक अधूरा उपन्यास भी है मंगलसूत्र प्रेमचंद ने इसे लिखना तो शुरू किया लेकिन चार परिच्छेद ही लिख पाए थे कि उनका निधन हो गया, इस अधूरे उपन्यास में तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के प्रति उपन्यासकार का असंतोष झलकता है। मुंशी प्रेमचंद ने 19वीं सदी के अंतिम दशक से लेकर 20वीं सदी के करीब तीसरे दशक तक भारत में फैली अनेक सामाजिक समस्याओं पर अपनी कलम चलाई। वह न केवल भारतीय

Received: 11.08.2023 **Accepted:** 14.09.2023 **Published**: 15.09.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.02
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

परंपरा के सर्जक वाहक बने बल्कि सांस्कृतिक समस्या का गंभीर दायित्व निभाया। फिर भी आलोचना संसार में उन पर अनेक आरोप लगते रहे हैं–'' प्रेमचंद के उपन्यासों के संबंध में जो विचार व्यक्त किये गए हैं, वे प्रायः एकांगी हैं। एक ओर वे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारों की श्रेणी में रखे जाते हैं तो दूसरी ओर उन्हें द्वितीय श्रेणी का उपन्यासकार कहा जाता है। कोई उन्हें गांधीवादी सिद्ध करता है तो कोई मार्क्सवादी, कोई आदर्शवादी कहता है तो कोई यथार्थवादी कोई उनके कथ्य को भारतीय कहता है तो रूप को पाश्चात्य यानी अभारतीय। भिन्न–भिन्न रंगीन चश्मों से चश्मे का रंग हावी हो जाता है, प्रेमचंद पीछे छूट जाते हैं। वादग्रस्त होकर न जीवन को ठीक–ठिकाने से देखा जा सकता है और न साहित्य को। अतः प्रेमचन्द को विभिन्न कोणों से देखकर ही उनकी वास्तविकता समझी जा सकती है।''[8]

प्रेमचंद ने भारतीय जनमानस में जीवन मूल्यों को पुरजोर तरीके से स्थापित करने की कोशिश की। उन्होंने जीवन और साहित्य को समान रूप से प्रभावित किया और यही वजह है कि उनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है । दलित, स्त्री, मजदूर, किसान, रिश्वतखोरी, विधवा महिलाएं, बेमेल विवाह, धार्मिक पाखंड, मानवीय मूल्यों का खत्म होना, पीढ़ी अंतर ऐसे ही महत्वपूर्ण प्रश्न है। प्रेमचंद द्वारा साहित्य के माध्यम से उठाई गई चुनौतियां दशकों बाद भी मुँह बाए खड़ी हैं, और बार–बार प्रेमचंद की प्रासंगिकता को दर्शाती हैं। गोपाल राय ने लिखा है, "प्रेमचंद ने समकालीन मध्यवर्गीय समाज को, जो अनेक प्रकार के अंतर्विरोधों, तर्कहीन सामाजिक मान्यताओं तथा परंपरागत, रूढ़ नैतिक धारणाओं से ग्रस्त था, आलोचनात्मक दृष्टि से देखा, उसका अध्ययन–विश्लेषण किया तथा उसे अपने कथा संसार के माध्यम से प्रस्तुत किया।'' तत्कालीन सामाजिक ताने–बाने को लेकर प्रेमचंद की अपनी सोच एवं चिंताएं थीं, और उन्होंने इसे अपनी रचनाओं में मजबूत ढंग से उठाया भी है। वे भेद–भाव रहित राष्ट्र की कल्पना करते थे। उनका सपना हर तरह की विषमताओं को खत्म करके सामाजिक बराबरी को बढ़ावा देना था। किसान जीवन पर प्रेमचंद की सोच और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। देश के किसानों के जीवंत चित्रण में प्रेमचंद हिंदी साहित्य में अनूठे और लाजवाब रचनाकार रहे हैं। स्त्रियों के साथ हो रहे दोयम दर्जे के व्यवहार का प्रेमचंद ने कड़ा विरोध किया। स्त्रियों और किसानों के विकास को देश

Received: 11.08.2023 **Accepted:** 14.09.2023 **Published**: 15.09.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.02
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

के विकास की धुरी बताया। अपनी कहानियों उपन्यासों और विचारों के जरिए प्रेमचंद आज भी प्रासंगिक हैं और जब तक भारतीय समाज नहीं बदलेगा तब तक उनकी प्रासंगिकता बनी रहेगी। जो मानवीयता के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, की भूमिका से, लोकभरती प्रकाशन प्रयागराज, इक्कीसवाँ संस्करण, भूमिका–रामस्वरूप चतुर्वेदी।

2. प्रेमचंद कलम के सिपाही, अमृतराय, हंस प्रकाशन, प्रयागराज, दूसरा संस्करण, अक्टूबर, 2021 पेज 39–40 ।

3. हिन्दी साहित्य और संवेदना के विकास, रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभरती प्रकाशन, प्रयागराज, उनतीसवाँ संस्करण, 2022 पेज 140 ।

4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, प्रकाशक, मयूर बुक्स, 4226/1 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 85वाँ संस्करण, 2023 पेज 559 ।

5. हिन्दी साहित्य और संवेदना के विकास, रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभरती प्रकाशन, प्रयागराज, उनतीसवाँ संस्करण, 2022, पेज 141 ।

6. वही, पेज 142 ।

7. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, सोलहवाँ संस्करण, जुलाई, 2022 पेज 373 ।

8. वही, पेज 376 ।

Received: 11.08.2023 **Accepted:** 14.09.2023 **Published**: 15.09.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.